B.A (Hons. & Sub) Part-I
Paper-II
Abnormal Psychology
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D; Psychology
D. K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

PSYCHOLOGICAL THEORIES OF DREAM

स्वप्न क्या है? हम स्वप्न क्यों और कैसे देखते हैं? यह एक रहस्यमय विषय है। स्वप्न के अर्थ को जानने की जिज्ञासा मनुष्यों में हमेशा आरंभ से ही रही है। प्राचीन काल में स्वप्न की व्याख्या 'Supernatural theories' के आधार पर की जाती थी। उस समय यह मान्यता प्रचलित थी कि स्वप्न के पीछे अलौकिक शक्ति का हाथ होता है। एक अन्य मान्यता के अनुसार निद्रावस्था में शरीर से निकलकर आत्मा विचरण करती है और इस दरम्यान वह जो कुछ भी देखती सुनती है- वही स्वप्न में प्रकट होता है। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि यह सिद्धान्त वैज्ञानिक नहीं है।

शरीरशास्त्रियों ने इसकी व्याख्या शरीर क्रिया के आधार पर करने का प्रयास किया है। इनलोगों द्वारा स्थापित स्वप्न के सिद्धान्त को 'Physiological theories of dreams' कहा जाता है। इस श्रेणी के सिद्धान्तों की मूल मान्यता यह है कि "स्वप्न शारीरिक उत्तेजनाओं की मानसिक अभिव्यक्ति है।" अर्थात वातावरण की बाह्य उत्तेजनाओं के कारण शरीर के अन्दर परिवर्तन आता है और एक तरह की अन्तःक्रिया होती है जिसके फलस्वरूप स्वप्न की उत्पत्ति होती है। यह सिद्धान्त भी स्वप्न की आंशिक व्याख्या ही कर पाता है।

स्वप्न का अर्थ समझने के लिये मनोवैज्ञानिकों ने भी कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जिसे हम "Psychological theories of dreams" के नाम से जानते हैं। स्वप्न के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को जानने का प्रयास किये हैं। स्वप्न के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त अन्य सिद्धान्तों की तुलना में कुछ ज्यादा ही कारगर और सफल हैं। इनकी मान्यता है कि- "स्वप्न मानसिक क्रियाओं की एक विशेष अवस्था है, जो निद्रावस्था में व्यक्त होता है तथा इसका स्वरूप चित्रात्मक होता है।"

Scanned with CamScanner

स्वप्न के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों में फ्रायड, जुंग, एडलर द्वारा स्थापित सिद्धान्त काफी लोकप्रिय हैं। जुंग एवं एडलर, फ्रायड के शिष्य थे और Psychoanalysis की ही देन हैं। कुछ मुद्दों पर फ्रायड से असहमत होकर अपना अलग-अलग सम्प्रदाय एवं सिद्धान्तों की स्थापना की। इसीलिये तीनों द्वारा स्थापित सिद्धान्तों में कुछ हद तक साम्यता है तो कई अभिधारणाओं में अन्तर है। स्वप्न के तीनों सिद्धान्तों का वर्णन क्रमशः है:—

फ्रायड का स्वप्न सिद्धान्त

फ्रायड पहला व्यक्ति थे जिन्होंने स्वप्न का मनोवैज्ञानिक आधार ढूंढने के प्रयास किया। अब तक की प्रचलित मान्यताओं से हटकर एक नवीन विचारधारा को स्थापित की और विद्वानों को सोंचने पर मजबूर कर दिया। तत्कालिन सम्पूर्ण विश्व या तो फ्रायड के पक्ष में आ गया या विपक्ष में चला गया। फ्रायड ने (1900) ई० में एक पुस्तक "The interpretation of dream" प्रकाशित की जिसमें अपने स्वप्न सिद्धान्त की विशद व्याख्या प्रस्तुत की।

फ्रायड का सिद्धान्त Clinical assessment पर आधारित थी। वे रोगियों का ईलाज करते समय इस निर्णय पर पहुँचे कि प्रत्येक स्वप्न सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण होते हैं। उनके इस निष्कर्ष का आधार Psychoanalysis था। स्वप्न में छिपे हुए अर्थ को मनोविश्लेषण के आधार पर जाना जा सकता है। इसीलिए इनके सिद्धान्त को Psychoanalysis theory of dream भी कहा जाता है।

फ्रायड का यह भी मानना है कि स्वप्न के माध्यम से अचेतन मन की दमित कामुक इच्छाओं की तृप्ति होती है। इसीलिए फ्रायड के सिद्धान्त को wishfulfilment theory of dream भी कहा जाता है। फ्रायड के अनुसार:—

"Dream is that unconscious mental process of Sleeping state by which our unconscious desires and wishes are expressed and fulfilled in a desguised form."

फ्रायड के सिद्धान्त की अभिधारणाएँ :—

फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं अथवा अभिधारणाओं पर आधारित है।—

(1) स्वप्न के घटक या पहलु :— फ्रायड के अनुसार स्वप्न के दो पक्ष होते है—(1) व्यक्त पक्ष (Menifest Content) (11) अव्यक्त पक्ष (Latent Content)। स्वप्नद्रष्टा जो कुछ भी स्वप्न में व्याप्त होते देखता है- वह स्वप्न का व्यक्त पक्ष Menifest Content है। लेकिन स्वप्न का वास्तविक अर्थ वह नहीं होता है जो वह

स्वप्न में देख रहा होता है बल्कि स्वप्न का वास्तविक अर्थ व्यक्त पक्ष में छिपा रहता है जिसे Manifest content का Analytical Study करके प्राप्त किया जाता है - यही Latent Content है। यानी जिस कार्य के लिये स्वप्न का निर्माण हुआ वह स्वप्न का अव्यक्त पक्ष है। इसे Manifest Content के विश्लेषण से प्राप्त किया जाता है। जैसे एक 30 वर्ष की विधवा स्वप्न में देखती है कि उसकी चार साल की इकलौती छोटी बच्ची मर गई है।" इस स्वप्न में विधवा द्वारा बच्ची के मरने का स्वप्न देखना Manifest Content है, उस स्वप्न का, लेकिन जब विश्लेषण किया गया तो पता चला कि वास्तव में वह विधवा अपनी बच्ची के मरने की कामना करती थी क्योंकि उसे अपनी दूसरी शादी करनी थी। यह बच्ची उस राह में रोड़ा या रुकावट बन जाती थी यह विचार अचेतन मन में जाकर दमित हो गई थी जो स्वप्न में आकर प्रकट हुई। विधवा की दूसरी शादी की इच्छा उस स्वप्न में Latent Content है, जो Manifest Content में छिपा था; वह विश्लेषण द्वारा प्रकट हुआ।

(2) स्वप्न सार्थक होते हैं :- फ्रायड के अनुसार प्रत्येक स्वप्न सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण होते हैं। Super ego के Censor से बचने के लिए वेश बदलकर प्रकट होते हैं। इसलिये निरर्थक लगते हैं। इन्हें विश्लेषण करके जाना जा सकता है।

(3) स्वप्न एक अचेतन मानसिक क्रिया है :- फ्रायड का मानना है कि स्वप्न निद्रावस्था में घटित होनेवाली एक मानसिक क्रिया है। इसीलिये स्वप्न का चेतना अथवा ज्ञात व्यक्ति को नहीं रहता है।

(4) स्वप्न निद्रावस्था में आता है :- नींद की अवस्था में समाज की नैतिकता का भय कम हो जाता है। Super ego का Censor का लगाम ढीला पड़ जाता है। फलतः स्वप्न नींद में आकर अपनी की पूर्ति आसानी से कर लेती है।

(5) स्वप्न इच्छापूर्ति का साधन है :- यह फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त की सर्वाधिक महत्वपूर्ण assumption है। स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति की अचेतन में दमित इच्छाएँ संतृप्त हो जाती है, क्योंकि नैतिकता का भय कम हो जाता है।

(6) स्वप्न कामुक होते हैं :- फ्रायड का मानना है कि स्वप्न में Sexual desires होते हैं जिन्हें जाग्रत अवस्था में पूरा करना संभव नहीं होता है। इसलिए वे वेश बदलकर आते हैं।

Scanned with CamScanner

(7) स्वप्न प्रतीकात्मक होते हैं :- फ्रायड का कहना है कि नींद में भी थोड़ा बहुत censor का डर रहता है। इसलिए अचेतन की दमित अनैतिक इच्छाएँ Symbolic प्रकट होती हैं। और प्रत्येक Symbols का अर्थ होता है। ये अर्थ सार्वजनीन (Universal) स्वरूप के होते हैं। लम्बा, पतला, छड़ीनुमा, नुकीला वस्तु का स्वप्न Male Sex का प्रतीक एवं गोल, गहरा, गुफानुमा वस्तु का स्वप्न female Sex का प्रतीक, तैरना, उड़ना, पहाड़ चढ़ना, खाना खाना Sexual act and intercourse का प्रतीक है। ~~सब~~ एक लम्बी सूची फ्रायड ने प्रस्तुत की है।

(8) स्वप्न व्यक्तिगत होते हैं : स्वप्न में वैसी निजी इच्छाओं की तृप्ति होती है जो बचपन से अबतक की होती है लेकिन किसी कारणवश पूरा न होकर अचेतन में दमित थी।

(9) स्वप्न अतीत अनुमुखी होते हैं :- स्वप्न का सम्बन्ध व्यक्ति की अतीत में घटित इच्छाओं एवं घटनाओं से है उसका वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं से मतलब नहीं होता।

(10) शैशवकालीन कामुक इच्छाओं की अभिव्यक्ति :- स्वप्न के माध्यम से Infantile libidinous wishes की अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि भी होती है जो उचित लालन पालन के अभाव में अधूरी रह गई थी।

(मूल्यांकन) फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त पर कई आपत्तियाँ उठाई गई। खासकर Terror Dream या Painful dream को समझाने में असफल है। Sex पर आवश्यकता से अधिक जोर देने का दोष। इसीतरह प्रतीकों का Universal बताना। स्वप्न में फ्रायड अतीत पर ज्यादा जोर देते हैं। आदि-आदि। इसीलिए फ्रायड ने 1936 में अपने सिद्धान्त में संशोधन करते हुए परिमार्जित किया और आज Attempted wishfulfilment कहा और इसका तात्पर्य इच्छापूर्ति का प्रयास होता है। इच्छापूर्ति होती ही है ~~ऐसा~~

Scanned with CamScanner

(2)

Jung's theory of dream
युंग का स्वप्न सिद्धान्त

युंग फ्रायड के प्रिय शिष्य थे। फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त की कुछ मान्यताओं से उनका इत्तेफाक नहीं था। फलतः इससे मतभेद उत्पन्न हुआ और जुंग ने एक अलग सिद्धान्त की स्थापना की जिसे Analytical Psychology के नाम से जाना जाता है। जुंग द्वारा एक नई स्वप्न सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया जिसे - 'Auto Symbolic theory of dream' के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार जीने की इच्छा (will to live) मौलिक इच्छा है और व्यक्ति इसी के लिए हरेक प्रकार का कार्य करता है तथा क्रियाशील रहता है। इस प्रकार इन्होंने फ्रायड की Libidial urges के स्थान पर will to live को महत्व दिया। स्वप्न के इस सिद्धान्त की मूल मान्यता यह है कि "जब will to live यानि मौलिक इच्छा में रुकावट आ जाती है तो वह Regression के द्वारा अचेतन मन में चली जाती है और स्वप्न में अपना वेश बदलकर प्रकट होती है। स्वप्न में केवल कामुक इच्छाओं की तृप्ति ही नहीं होती है बल्कि अन्य सभी इच्छाओं की तृप्ति होती है, तथा इनका सम्बन्ध भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों तरह की घटनाओं से होते हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि ये तीनों ही तरह की घटनाएँ वेश बदलकर प्रतीक के रूप में प्रकट होती हैं।"

युंग के स्वप्न सिद्धान्त की अभिधारणाएँ
Assumptions

1.) स्वप्न निद्रावस्था में आता है। - युंग भी फ्रायड की तरह यह मानते हैं कि स्वप्न निद्रावस्था में घटित होते हैं।

2.) स्वप्न सार्थक होते हैं। — फ्रायड की तरह जुंग भी यह मानते हैं कि स्वप्न सार्थक होते हैं, जिन्हें विश्लेषण के माध्यम से समझा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Personal unconscious में व्यक्तिगत तथा अर्जित विचार अनुभव रहते हैं जबकि collective unconscious पूर्वजों से प्राप्त विचार संस्कार रहते हैं।

4) स्वप्न का स्वरूप प्रतीकात्मक होता है :- फ्रायड और युंग दोनों स्वप्न को प्रतीकात्मक मानते हैं, लेकिन युंग फ्रायड से अलग विचार रखते हैं। उनके अनुसार प्रतीक का सार्वभौमिक (Universal) अर्थ नहीं हो सकता। दूसरी बात यह भी है कि युंग प्रतीक को Sexual एवं Non Sexual दोनों मानते हैं।

(5) स्वप्न में इच्छापूर्ति की अभिव्यक्ति होती है :-

दोनों स्वप्न को इच्छापूर्ति का साधन मानते हैं। लेकिन फ्रायड के अनुसार जहाँ Personal Conscious में दमित इच्छाओं की पूर्ति होती है, वहीं युंग का मानना है कि Personal unconscious के साथ साथ जातीय अचेतन की इच्छाएँ जो अधूरी रह गई हैं उनकी भी तृप्ति होती है।

(6) स्वप्न में वर्तमान, भूत एवं भविष्य तीनों काल की बातें होते हैं :- युंग का यह मानना है कि स्वप्न में अतीत की इच्छाओं के साथ साथ वर्तमान की सीमान्त चेतनाओं एवं भविष्योन्मुखी चेतनाओं का भी प्रतीकरण होता है। युंग ने इसका एक बड़ा ही ~~अच्छा~~ उदाहरण अपनी पुस्तक - The modern man Search of Soul" में दी है। युंग का एक मित्र प्रोफेसर पहाड़ पर चढ़ने के शौकीन थे। एक दिन रात में ~~युंग~~ ने (मित्र) स्वप्न में देखा कि वह ऊँची पहाड़ पर चढ़ रहा है। चोटी बर्फ से ढकी है। वह सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने के बाद मैंने स्वयं में देखा की आकाश में चढ़ा जा रहा हूँ और मैं आकाश में पहुँच जाऊँगा। और वह बहुत खुश था।"

युंग ने इस स्वप्न का विश्लेषण किया और भविष्य में होनेवाली दुर्घटना के प्रति सचेत किया और अपने प्रो० मित्र को कहा कि कोई गाईड के पहाड़ पर न चढ़े। पहाड़ पर चढ़ते समय गिरकर बर्फ में दब गये। हलाँकि सैनिकों ने बचा लिया, लेकिन फिर एक माह बाद फिर पहाड़ पर चढ़ने गये और अबकी बार गिरकर मर गये।

मूल्यांकन :- युंग की स्वप्न सिद्धान्त फ्रायड के सिद्धान्त की तुलना में कुछ ज्यादा संगोषजनक है फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ भी है। यह पूर्णतः दोषमुक्त नहीं है

युंग की बड़ी सफलता यह है कि उन्होंने अपने स्वप्न सिद्धान्त के आधार पर Punishment dream, Future oriented dream, Terror dream की व्याख्या करने में सफलता हासिल कर ली है। लेकिन वे Super Ego में दमित इच्छा की बात करते हैं और उनका Racial unconscious समझ से परे है। निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि युंग का सिद्धान्त फ्रायड की स्वप्न सिद्धान्त की तुलना में कुछ ज्यादा संतोषजनक है, लेकिन फ्रायड का स्वप्न सिद्धान्त युंग के सिद्धान्त की तुलना में बहुत अधिक लोकप्रिय है। युंग के सिद्धान्त में प्रयोगात्मक अध्ययन का अभाव है, सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक जोर है। मैक्डूगल के अनुसार—

"कुछ सीमाओं के बावजूद जुंग का विचार फ्रायड की तुलना में अधिक स्वस्थ एवं मान्य है।

ADLER'S THEORY OF DREAM :—

एडलर, फ्रायड से अलग होकर मनोविज्ञान में एक नवीन सम्प्रदाय की स्थापना की जिसे Individual Psychology के नाम से जाना जाता है। इस सम्प्रदाय में कई तरह की विचारधाराओं का एवं सिद्धान्त है जिसमें स्वप्न का सिद्धान्त भी एक प्रमुख सिद्धान्त है।

एडलर की मान्यता है कि व्यक्ति की 'श्रेष्ठता का भाव' का प्रकाशन स्वप्न में होता है। एडलर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठता की शिखर को छूना चाहता है, जिसके लिये एक अलग किस्म का Life Style विकसित कर लेता है लेकिन किसी कारणवश वह श्रेष्ठता हासिल करने में असफल हो जाता है तो उसमें निराशा एवं हीनभावना पनपती है और व्यक्ति उन्हीं श्रेष्ठता की भावना की प्रवृत्तियों की तृप्ति के लिये स्वप्न देखता है। इस संदर्भ में एडलर का कहना है।— Dreams are attempted solution of problems arising from conflict between life's two basic principles – Superiority Striving and feeling of inferiority."

अर्थात स्वप्न के माध्यम से श्रेष्ठता की भावना एवं हीन भावना से उत्पन्न संघर्षों का समाधान होता है।"

एडलर का यह भी कहना है कि जब व्यक्ति श्रेष्ठता की भावना स्थापित करने में असफल हो जाता है तो हीनभावना का शिकार ... Inferiority feeling

एडलर का यह भी मानना है कि स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति वर्तमान घटनाओं से उत्पन्न समस्याओं का भी समाधान कर लेता है। अतः एडलर के अनुसार स्वप्न अतीत की कुंठित भावनाओं के साथ-साथ वर्तमान की समस्याओं का समाधान एवं भावी जीवन के कार्यों का पूर्वाभास भी होता है।"

एडलर के स्वप्न सिद्धान्त की प्रमुख मान्यताएँ :- Assumptions

(1) एडलर की मान्यता है कि सारे कार्यों के पीछे will to live का हाथ होता है। यह सामान्य, असामान्य दोनों तरह की व्यवहारों का मूल निर्धारक है। फ्रायड libido को मानते हैं।

2) जुंग ने बाद में will to live के जगह urge for superiority को सभी क्रियाओं का आधार माना।

3) जुंग के अनुसार बालक असहाय एवं निर्बल होते हैं जिससे उनमें हीन भावना पनपती है। इसी हीनभावना से मुक्ति के लिए superiority feeling को स्थापित करना चाहता है। स्वप्न दोनों में सामंजस्य स्थापित करता है।

4) स्वप्न में व्यक्ति की Life Style की भी अभिव्यक्ति होती है जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग तरह की होती है। स्वप्न Life Style एवं वर्तमान समस्या के बीच समायोजन का प्रयास है।

5) एडलर स्वप्न में वर्तमान समस्याओं के समाधान पर अधिक जोर देते हैं।

मूल्यांकन :- यद्यपि एडलर का स्वप्न सिद्धान्त अपूर्व है क्योंकि वर्तमान समस्या के समाधान पर बल देते हैं तथा बताते हैं कि स्वप्न में व्यक्ति की Life Style की अभिव्यक्ति होती है। स्वप्न में sexual एवं Non sexual दोनों बातें होते हैं। लेकिन यदि गहराई पूर्वक अध्ययन किया जाए तो एडलर का स्वप्न सिद्धान्त बिलकुल सपाट है। इसमें कई गंभीर दोष है। अतः इसे सतही सिद्धान्त ही कहना उचित लगता है।

स्वप्न में उन समस्याओं की समाधान का प्रयास होता है जो अधिपत्यकी भावना और हीन भावना के संघर्ष से उत्पन्न होते हैं। [एडलर]

R.K. Singh
11/05/2020
विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कालेज, डुमराँव

Scanned with CamScanner